12 शिवमंगल सिंह 'सुमन'

जीवन-परिचय–डॉ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म 5 अगस्त, सन् 1915 ई0 (संवत् 1972 श्रावण मास शुक्ल पक्ष नागपंचमी) को ग्राम झगरपुर, जिला उन्नाव (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकुर साहब बख्श सिंह था।

सुमन जी ने अधिकांश रूप से रीवा, ग्वालियर आदि स्थानों में रहकर आरम्भिक शिक्षा से लेकर कॉलेज तक की शिक्षा प्राप्त की है। तत्पश्चात् सन् 1940 ई0 में उन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से परास्नातक (हिन्दी) की उपाधि प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1942 ई0 में उन्होंने विक्टोरिया कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। सन् 1948 ई0 में माधव कॉलेज उज्जैन में हिन्दी विभागाध्यक्ष बने, दो वर्षों के पश्चात् सन् 1950 ई0 में उनको 'हिन्दी गीतिकाव्य का उद्भव-विकास और हिन्दी-साहित्य में उसकी परम्परा' शोध प्रबन्ध पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय ने डी0लिट् की उपाधि प्रदान की। आपने सन् 1954-56 तक होल्कर कॉलेज इन्दौर में हिन्दी विभागाध्यक्ष के पद पर भी सुचारु रूप से कार्य किया। सन् 1956-61 ई0 तक नेपाल स्थित भारतीय दूतावास में सांस्कृतिक और सूचना विभाग का कार्यभार आपको सौंपा गया।

कवि : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म–**5 अगस्त, सन् 1915 ई0। (ग्राम-झगरपुर, जनपद-उन्नाव, उ0प्र0)
- **मृत्यु–**27 नवम्बर, सन् 2002 ई0। (उज्जैन, मध्य प्रदेश)
- **रचनाएँ–**मिट्टी की बारात, हिल्लोल, जीवन के गान
- **पुरस्कार–**1958 – देव पुरस्कार
  1974 – सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार
  1974 – साहित्य अकादमी पुरस्कार
  1974 – पद्मश्री
  1993 – शिखर सम्मान
  1993 – 'भारत भारती' पुरस्कार
  1999 – पद्म भूषण।

सन् 1961-68 तक माधव कॉलेज उज्जैन में वे प्राचार्य के पद पर कार्य करते रहे। इन आठ वर्षों के बीच सन् 1964 ई0 में वे विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में कला संकाय के डीन तथा व्यावसायिक संगठन, शिक्षण समिति एवं प्रबन्धकारिणी सभा के सदस्य भी रहे। सन् 1968-70 ई0 तक सुमन जी विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में कुलपति के पद पर आसीन रहे।

डॉ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन' को सन् 1958 ई0 में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा उनके काव्य संग्रह 'विश्वास बढ़ता ही गया' पर 'देव' पुरस्कार प्राप्त हुआ। सन् 1964 ई0 में 'पर आँखें नहीं भरीं' काव्य संग्रह पर 'नवीन' पुरस्कार से सम्मानित किये गये। आपको सन् 1973 ई0 में मध्य प्रदेश राजकीय उत्सव में सम्मानित किया गया। जनवरी सन् 1974 में भारत सरकार द्वारा उन्हें 'पद्मश्री' की उपाधि से विभूषित किया गया। भागलपुर विश्वविद्यालय बिहार द्वारा 20 मई सन् 1973 ई0 को डी0लिट् की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। नवम्बर सन् 1974 ई0 को उन्हें 'सोवियत-भूमि नेहरू पुरस्कार' प्रदान किया गया। 26 फरवरी, 1973 ई0 को 'मिट्टी की बागत' नामक काव्य संग्रह पर 'सुमन जी' को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपने अक्टूबर सन् 1974 ई0 को नागपुर विश्वविद्यालय महाराष्ट्र में दीक्षान्त भाषण दिया। पुनः 24 अप्रैल, 1977

ई0 को राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में पंचम दिनकर स्मृति व्याख्यान माला के अन्तर्गत भाषण के लिए आपको आमन्त्रित किया गया। सन् 1975 ई0 में राष्ट्रकुल विश्वविद्यालय परिषद् के लन्दन विश्वविद्यालय स्थित मुख्यालय में कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य के रूप में उनकी नियुक्ति की गयी। 17-18 जनवरी सन् 1977 ई0 को भारतीय विश्वविद्यालय परिषद् कोयम्बटूर (तमिलनाडु) में हुए बावनवें वार्षिक अधिवेशन की अध्यक्षता की। पुनः 15-16 जनवरी सन् 1978 ई0 को सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट में भारतीय विश्वविद्यालय परिषद् के तिरपनवें अधिवेशन की अध्यक्षता की। 27 नवम्बर, 2002 ई0 को शिवमंगल सिंह 'सुमन' का 87 वर्ष की अवस्था में निधन हो गया।

रचनाएँ–सुमन जी की रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(1) **हिल्लोल**–यह सुमन जी के प्रेम गीतों का प्रथम काव्य संग्रह है। इसमें हृदय की कोमल भावनाओं को चित्रित किया गया है।

(2) **जीवन के गान, प्रलय सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया**– इन सभी संग्रहों की कविताओं में क्रान्तिकारी भावनाएँ व्याप्त हैं। इन कविताओं में पीड़ित मानवता के प्रति सहानुभूति तथा पूँजीवाद के प्रति आक्रोश है।

(3) **विन्ध्य हिमालय**–इसमें देश-प्रेम तथा राष्ट्रीयता की कविताएँ हैं।

(4) **पर आँखें नहीं भरीं**–यह प्रेम गीतों का संग्रह है।

(5) **मिट्टी की बारात**–इस पर सुमन जी को अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

साहित्यिक सेवाएँ–डॉ0 'सुमन' जी प्रगतिवादी कवि के रूप में हमारे समक्ष अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से उपस्थित होते हैं। आपकी कविताओं में दलित, पीड़ित, शोषित एवं वंचित श्रमिक वर्ग का समर्थन किया गया है, साथ ही सामान्य रूप से पूँजीपति वर्ग तथा उनके अत्याचारों का खण्डन भी अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। सामयिक समस्याओं का विवेचन उनकी कविताओं का प्रमुख अंग रहा है। आपकी कविताओं में आस्था और विश्वास का स्वर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। आपने समाज की रूढ़िवादी परम्पराओं तथा वर्ण जातिगत विषमताओं एवं भाग्यवादी विचारधारा का खण्डन भी किया है।

भाषा–सुमन जी की भाषा जनजीवन के समीप सरल तथा व्यावहारिक भाषा है। छायावादी रचनाओं की भाषा अलंकरण, दृढ़ता, अस्पष्टता, वयवीयता आदि आपकी रचनाओं में नहीं है। इसके विपरीत स्पष्टता और सरलता है। जनसाधारण में प्रस्तुत होने वाली भाषा का प्रयोग हुआ है। भाषा में उर्दू शब्दों को पर्याप्त प्रश्रय मिला है।

सुमन जी ने अनेक नये शब्दों का निर्माण भी किया है, जिन्हें हम तीन भागों में बाँट सकते हैं– (क) नवीन सन्धि, शब्द, (ख) सरल सामाजिक योजना तथा (ग) देशज शब्द।

भाषा को प्रभविष्णु बनाने के लिए सुमन जी ने पुनरुक्ति को अपनाया है।

शैली–सुमन जी की शैली में ओज और प्रसाद गुणों की प्रधानता है। उन्होंने अपनी रचनाओं में लाक्षणिकता का भी प्रयोग किया है। सुमन जी की कविताओं की अभिव्यक्ति सौन्दर्य की एक विशेषता काव्यवाद का निर्वहन भी है। इसके अन्तर्गत जीवन की वर्तमान समस्याओं का पौराणिक घटनाओं से साम्य स्थापित किया है। आपकी कविताओं में प्रतीक विधान भी दर्शनीय है। सुमन जी की कविताओं में अलंकारों की समास योजना नहीं है। अनायास ही जो अलंकार आपकी कविताओं में आ गये हैं, ये भावोत्कर्ष में सहायक हुए हैं।

हिन्दी साहित्य में स्थान–'सुमन' जी भारतीय माटी की वह गन्ध हैं, जिसमें जीवन रस-आनन्द सर्वत्र महकता रहता है। जिस प्रकार पृथ्वी की अभिव्यक्ति वनस्पतियों द्वारा होती है उसी प्रकार वनस्पतियों के रस से जीवित मानव प्राणी की अभिव्यक्ति उसकी कलात्मकता और वैज्ञानिकता में होती है। 'सुमन' जी भारतीय संस्कृति के अभिवक्ता हैं। प्रकृति के रूप, रस, गन्ध आदि के चितेरे भी हैं। जीवन रस की मादकता के गायक हैं। जनसामान्य के दुःख-दर्द से द्रवित होने वाले मानव और परम्परागत गौरव गरिमा के संरक्षक हैं। उनके इन्हीं विशिष्ट रूपों को काव्य में पहचाना गया है। एक युग विशेष की मानसिकता की झाँकी उनके काव्य के गुणों से परिपूर्ण एवं प्रभावशाली है।

अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'सुमन' जी का हिन्दी साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान है। वे हिन्दी साहित्य को ऐसी निधि प्रदान कर गये हैं जो कभी भी नष्ट नहीं हो सकती है। शरीर तो नश्वर है लेकिन वैचारिक शरीर शाश्वत रूप से जीवित रहता है। सुमन जी अपनी कृतियों के माध्यम से हिन्दी साहित्य के प्रेमियों के मानस पटल पर सदैव नित नवीन रूप में मुस्कराते रहेंगे। ♦

युगवाणी

हर क्यारी में पद-चिह्न तुम्हारे देखे हैं,
हर डाली में मुस्कान तुम्हारी पायी है,
हर काँटे में दुःख-दर्द किसी का कसका है,
हर शबनम ने जीवन की प्यास जगायी है।

हर सरिता की लचकीली लहरें डसती हैं,
हर अंकुर की आँखों में कोर समाती है,
हर किसलय में अधरों की आभा खिलती है,
हर कली हवा में मचल-मचल इठलाती है।

अम्बर में उगती सोने-चाँदी की फसलें,
ये ज्वार-बाजरे की मस्ती लहराती है,
अन्तर में इसका बिम्ब उभरता आता है,
चाँदनी, सिन्धु में सौ-सौ ज्वार जगाती है।

मैं कैसे इनकी मोहकता से मुख मोड़ूँ,
मैं कैसे जीवन के सौ-सौ धन्धे छोड़ूँ,
दोनों को साथ लिए चलना क्या सम्भव है?
तन का, मन का पावन नाता कैसे तोड़ूँ?

क्या उम्र ढलेगी तो यह सब ढल जाएगा,
सूरज चन्दा का पानी गल, जल जाएगा,
जिनके बल पर जीने-मरने का स्वर साधा,
उनका आकर्षण साँसों को छल जाएगा।

जिस दिन सपनों के मोल-भाव पर उतरूँगा,
जिस दिन संघर्षों पर जाली चढ़ जाएगी,
जिस दिन लाचारी मुझ पर तरस दिखाएगी,
उस दिन जीवन से मौत कहीं बढ़ जाएगी।

इन सबसे बढ़कर भूख बिलखती मिट्टी की
पथ पर पथराई आँखें पास बुलाती हैं,
भगवान भूल में रचकर जिनको भूल गया
जिनकी हड्डी पर धर्म-ध्वजा फहराती है।

इनको भूलूँ तो मेरी मिट्टी मिट्टी है
मेरी आँखों का पानी केवल पानी है,
इनको भूलूँ तो मेरा जन्म अकारथ है
मेरा जीना मरने की मूक कहानी है।

मैं देख रहा हूँ तुम इनको फिर भूल चले
बातों-बातों में हमें बहुत बहलाते हो,
बेबसी चीखती जब बच्चों की लाशों पर
उसको आजादी की प्रतिध्वनि बतलाते हो।

यों खेल करोगे तुम कब तक असहायों से
कब तक अफीम आशा की हमें खिलाओगे,
बरबाद हो गयी फसल कहीं जोती-बोई
क्या बैठ अकेले ही मरघट पर गाओगे?

विश्वास सर्वहारा का तुमने खोया तो
आसन्न-मौत की गहन गोंस गड़ जाएगी,
यदि बाँध बाँधने के पहले जल सूख गया
धरती की छाती में दरार पड़ जाएगी।

सदियों की कुर्बानी यदि यों बेमोल बिकी
जमुहाई लेने में खो गया सबेरा यदि,
जनता पूर्णिमा मनाने की जब तक सोचे
घिर गया अमावस का अम्बर में घेरा यदि।

इतिहास न तुमको माफ करेगा याद रहे
पीढ़ियाँ तुम्हारी करनी पर पछताएँगी,
पूरब की लाली में कालिख पुत जाएगी
सदियों में फिर क्या ऐसी घड़ियाँ आएँगी?

इसलिए समय के सैलाबों को मत रोको
खुशहाल हवाओं में न खिड़कियाँ बन्द करो,
हर किरण जिन्दगी की आँगन तक आने दो
नव-निर्माणों की लपटों को मत मन्द करो।

इस नए सबेरे की लाली को देखो तो
इसकी अपनी कितनी पहचान पुरानी है,
भू, भुवः, स्वर्ग को एक बनाने आयी जो
युग की गायत्री सब छन्दों की रानी है।

('विन्ध्य हिमालय' से)

अभ्यास प्रश्न

• विस्तृत उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए तथा काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—

(क) हर क्यारी में ..... मचल-मचल इठलाती है।

(ख) क्या उम्र ढलेगी तो ..... मौत कहीं बढ़ जायेगी।

(ग) विश्वास सर्वहारा..... दरार पड़ जायेगी।

(घ) सदियों की कुर्बानी .....अम्बर में घेरा यदि।

(ङ) इतिहास न तुमको.....को मत मन्द करो।

2. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।

3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के जीवन-वृत्त एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

4. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की साहित्यिक विशेषताएँ एवं भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।

5. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जीवन-परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान का उल्लेख कीजिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'युगवाणी' कविता के माध्यम से कवि क्या सन्देश देना चाहता है?
2. 'युगवाणी' कविता की भाषागत विशेषताएँ लिखिए।
3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा रचित 'युगवाणी' कविता का सारांश संक्षेप में लिखिए।
4. कवि प्रस्तुत कविता के माध्यम से किन वास्तविकताओं के प्रति आगाह किया है?
5. 'युगवाणी' कविता में कवि ने शासकों को क्या परामर्श दिया है?
6. 'युगवाणी' कविता में कवि किसके इतिहास को माफ न करने को कहा है?

● अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. शिवमंगल सिंह 'सुमन' किस काल के कवि हैं?
2. शिवमंगल सिंह 'सुमन' किस धारा के कवि हैं?
3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
4. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
5. 'युगवाणी' कविता का तात्पर्य बताइए।

● काव्य-सौन्दर्य एवं व्याकरण-बोध

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
(क) तन का, मन का पावन नाता कैसे तोड़ूँ?
(ख) इतिहास न तुमको माफ करेगा याद रहे।
(ग) नव निर्माण की लपटों को मत मन्द करो।
(घ) विश्वास सर्वहारा का तुमने खोया तो
आसन्न मौत की गहन गोंस गड़ जायेगी।

2. निम्नलिखित शब्द-युग्मों से विशेषण-विशेष्य अलग कीजिए—
पद-चिह्न, धर्म-ध्वजा, दुःख-दर्द।

● आन्तरिक मूल्यांकन

(1) डॉ० शिवमंगल सिंह 'सुमन' को प्रगतिवादी कवि कहा जाता है, ऐसे प्रगतिवादी कवियों की सूची बनाइये।
(2) शिवमंगल सिंह 'सुमन' के पुरस्कृत कृतियों की सूची बनाइये।

♦